इब्रानियों 10:26-31 की कड़ी चेतावनी

फ्रैंकलीन द्वारा अध्ययन

इब्रानियों 10:26 क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम **जान बूझकर पाप** करते रहें, तो पापों के लिये फिर **कोई बलिदान बाकी नहीं**।(27) हां, **दण्ड** का एक भयानक बाट जोहना और **आग** का ज्वलन बाकी है **जो विरोधियों को भस्म कर देगा।**(28) जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है।(29) तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी **दण्ड** के योग्य ठहरेगा, जिस ने **परमेश्वर के पुत्र** को पांवों से **रौंदा**, और **वाचा के लोहू** को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, **अपवित्र** जाना हैं, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया।(30) क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: और फिर यह, कि **प्रभु अपने लोगों** का न्याय करेगा।(31) जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।।

इन पदों को समझने में बहुत लोगों को बहुत कठिनाई रही है क्योंकि यह बाइबल की बाकि शिक्षाओं से कुछ विपरीत है। यह सैकड़ों सालों से विवादास्पद विषय रहा है।

इन पदों के सत्य और विश्वास तथा सही समझ की स्पष्टता की खोज में मैने इन पदों का अध्ययन करने में कई घंटे लगाए। इसको सही रीति से समझने के लिए हमें उस एक समान पक्ष को ध्यान में रखना होगा और उससे अवगत होना पड़ेगा जो हम सब ने पाया है और जो हमें सिखाए गए सैद्धान्तिक पक्ष पर आधारित है, और जिसे हमने सही मान कर स्वीकारा है। हमें अपने पक्ष से इस अध्ययन को निर्देशित नहीं करना चाहिए।

इस कठिन अनुच्छेद को समझने के लिए इन पदों के सन्दर्भ का अध्ययन करना जरूरी है।

इब्रानियों 7:25-27 इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, **वह उन का पूरा पूरा उद्धार कर सकता है,** क्योंकि वह उन के लिये **विनती करने** को सर्वदा जीवित है।।(26) सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो।(27) और उन महायाजकों के समान उसे आवश्यक नहीं कि **प्रति दिन** पहिले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिये **बलिदान** चढ़ाए; क्योंकि उस ने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे **एक ही बार निपटा दिया।**

समस्या यह है: केवल **एक** ही बलिदान प्रभु परमेश्वर को प्रसन्न करता है। इसमें एक भी वस्तु को या किसी को भी और जोड़ना यह मानना होगा कि **जो उसने हमारे लिए दान दिया है वह पर्याप्त नहीं है।** इन बातों से वह प्रसन्न नहीं होता क्योंकि उसने तो हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को दान स्वरूप दे दिया है।

इब्रानियों 9:12 और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर **अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार** पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और **अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।**

- इस सच्चाई पर विश्वास करने के अलावा जो यीशु मसीह ने अपने बलिदान के लहू से हमारे लिए किया, हमें अनन्त जीवन के लिए और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।

इब्रानियों 9:14 तो **मसीह का लहू** जिस ने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को **मरे हुए कामों** से क्यों न **शुद्ध** करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।

- उसके लहू के द्वारा **पूरे किए गए कार्य** और **उस के बलिदान** के सच पर विश्वास करके और समझ कर, हमारे द्वारा क्षमा और जीवन लाने का प्रयास करने के लिए पहले किए गए सभी "मरे हुए कामों" (ऐसा कार्य जिसमें जीवन नहीं) से हमारा मन पूर्णत: शुद्ध हो जाता है।

इब्रानियों 9:26 नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को बार बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह **एक बार** प्रगट हुआ है, **ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।**

- पापों को "दूर कर दिया" गया और अब हमारे **अनन्त जीवन** के लिए यह परमेश्वर के साथ समस्या नहीं है। एकमात्र बलिदान जो यह कर सकता था, उसे स्वीकार कर लिया गया है।

- रोमियों 8:1-2 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, **उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं**: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि **जीवन की आत्मा** की व्यवस्था ने **मसीह यीशु** में मुझे पाप की, और **मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।**

इब्रानियों 9:28 वैसे ही मसीह भी, **बहुतों के पापों** को उठाने के लिये **एक बार** बलिदान होकर, दूसरी बार प्रकट होगा। **पाप उठाने के लिए नहीं**, परन्तु उनके उद्धार के लिए जो उत्सुकता से उनके आने की प्रतीक्षा करते हैं।

- "पाप उठाने के लिए नहीं" स्पष्ट रीति से यह बताता है - प्रभु के साथ अनन्त जीवन पाने के लिए **पाप समस्या नहीं है** क्योंकि **जो लोग** अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त **जीवन** में राज्य करेंगे। रोमियों 5:17

- "दूसरी बार प्रकट होगा", उद्धार के दूसरे पहलू के बारे में बताता है। उसके दूसरे आगमन पर हम इस संसार के अन्यायों और बुराइयों से बचाए जाएंगे। [संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।। यूहन्ना 16:33]

इब्रानियों 10:10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के **एक ही बार** बलिदान चढ़ाए जाने के **द्वारा पवित्र किए गए हैं।**

- उसकी इच्छा से हम अलग किए गए हैं और हम अपने द्वारा किए गए किसी कार्य से नहीं परन्तु यीशु के लहू ने जो हमारे लिए किया, उसी के द्वारा पवित्र ठहराए गए हैं।

इब्रानियों 10:18 और जब इन की **क्षमा** हो गई है, तो **फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।।**

उसका कहना है : **एकमात्र** भेंट जो पापों को क्षमा कर सकती थी, वह दी जा चुकी है। **अब पापों के लिए और कोई उपाय नहीं है।**

यदि हम किसी और बलिदान की ओर मुड़ जाएं - या उसमें कुछ और जोड़ना ज़रुरी कर दें - तो इसका अर्थ है कि हम कह रहे हैं कि यीशु का लहू पूरी तरह से पर्याप्त नहीं है। **और यह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता।**

> **केवल** यीशु मसीह का **लहू** ही, प्रभु परमेश्वर को स्वीकार्य है।

इब्रानियों 10:19-22 सो हे **भाइयो** (वह विश्वासियों को लिख रहा है) , जब कि हमें **यीशु के लहू** के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से (मरे हुए कामों के विपरीत) पवित्र स्थान में प्रवेश करने का **हियाव** हो गया है। (20) जो उस ने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, **हमारे लिये अभिषेक किया है,** (21) और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। (22) तो आओ; हम **सच्चे मन**, और **पूरे विश्वास** के साथ, और विवेक को दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को **शुद्ध** जल से धुलवाकर परमेश्वर के **समीप जाएं।**

> **यीशु मसीह के लहू** ने हमें क्षमा और शुद्ध कर दिया है। तथा हमारे पास हमारी मध्यस्थता करने के लिए एक महान याजक है। जो हमें एक सच्चा मन पूरे विश्वास के साथ देगा ताकि हम **उसके समीप जाएं।** इसलिए :

इब्रानियों 10:23 और अपनी आशा के अंगीकार को **अचल होकर** (उसके लहू में) दृढ़ता से थामें रहें; क्योंकि **जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है।**

> वह विश्वासयोग्य और भरोसेमन्द है। उसके लहू ने जो हमारे लिए किया है उस पर हम विश्वास करें तथा कभी भी शक न करें।

परन्तु : **इब्रानियों 10:26** क्योंकि **सच्चाई की पहचान** प्राप्त करने के बाद यदि **हम** जान बूझकर पाप करते रहें (किसी दूसरे कार्य अथवा बलिदान की ओर मुड़ कर और निर्भर हो कर), तो पापों के लिये फिर कोई **बलिदान** बाकी नहीं। (अब किसी और की ओर मुड़ना बाकि नहीं रहा) (27) हां, **दण्ड** का एक भयानक बाट जोहना और **आग का ज्वलन बाकी है** जो **विरोधियों** को **भस्म कर देगा।**

समस्या अभी भी है - अब पापों के लिए एक ही बलिदान है।
और कुछ पापों को क्षमा नहीं कर सकता। कुछ भी नहीं सिवाय यीशु के लहू के।

यदि आप उसके द्वारा किए गए उपाय में कोई दूसरा बलिदान **जोड़ते** हैं, कोई और भेंट, कार्य, या अच्छे दिखने वाले काम - जैसे उपवास, अपनी बाइबल में प्रति दिन पाँच अध्याय पढ़ना, या प्रतिदिन पाँच लोगों को गवाही देना, कोई और पश्चाताप का काम करना - यह सोचते हुए कि अनन्त जीवन को पाना अथवा रखना आवश्यक है, ... यह सब "मरे हुए काम" हैं और परमेश्वर के उपाय की निन्दा करते हैं।

तीतुस 3:5 तो **उस ने हमारा उद्धार किया**, और यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के **कामों** के आधार पर नहीं, परन्तु उसने अपनी दया के अनुसार, ...किया।

- अगर कोई उसके द्वारा दिए गए बलिदान के उपाय में कुछ जोड़ता है, तो वह परमेश्वर के क्रोध को ही उत्पन्न करता है।

सच्चा विश्वासी **एकमात्र बलिदान** की **सच्चाई की पहचान** - यीशु का लहू - प्राप्त करने के बाद, किसी और बलिदान की ओर मुड़ता है तो वह **दण्ड की अपेक्षा कर सकता है।**

यह नए विश्वासी पर लागू नहीं होता जो अभी तक **"सच्चाई की** पूरी **पहचान"** में नहीं आया।

इब्रानियों 10:27 हां, **दण्ड** का एक भयानक बाट जोहना और **आग** का ज्वलन बाकी है जो **विरोधियों** को **भस्म** कर देगा।

- सच्चे विश्वासी उसके **विरोधी नहीं हैं**। हम उसके मित्र, उसके बच्चे हैं।
- दण्ड का अर्थ : अपने कार्यों का उचित परिणाम भोगना।
- विश्वासी और अविश्वासी **एक ही न्याय का सामना नहीं करेंगे।**

1 पतरस 4:17 क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का **न्याय** किया जाए, और जब कि न्याय का आरम्भ **हम ही से होगा**, तो **उन का** क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार **को नहीं *मानते?**

स्ट्रोंग की शब्दानुक्रमणिका के अनुसार इस शब्द का अर्थ **: जानबूझ कर अविश्वास और आज्ञा उल्लंघन करना।** हमने सुसमाचार पर विश्वास किया है ।

विश्वासी के आग की ज्वाला किसी व्यक्ति को [जो बहुत बहुमुल्य है] **भस्म** नहीं करती, वह केवल **शुद्ध** करती है तथा जो व्यर्थ और बेकार है उसी को **भस्म** करती है।

1 कुरिन्थियों 3:8-15 लगानेवाला और सींचनेवाला दानों एक हैं; परन्तु **हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा**।(9) क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो....(12) और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है।(13) तो हर एक का **काम** प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि **आग के साथ प्रगट होगा:** और **वह आग हर एक का काम परखेगी** कि कैसा है?(14) जिस का **काम** उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह **मजदूरी** पाएगा।(15) और यदि किसी का काम जल जाएगा, **तो हानि उठाएगा**; पर **वह आप बच जाएगा** परन्तु जलते जलते।।

विश्वासियों का न्याय शुद्ध किए जाने और प्रतिफल के लिए होगा

अविश्वासी के आग की ज्वाला : मत्ती 13:37-43 2 पतरस 2:1-22

लेखक अपने लोगों के न्याय का एक और उदाहरण लेता है:

10:28 जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, **बिना दया के मार** डाला जाता है।

यहाँ वह व्यवस्थाविवरण 17:2-6 का ज़िक्र करता है जहाँ वह **अपने लोगों** के बारे में बात करता है, इस्राएल, जो उसके साथ **लहू की वाचा** में थे, सत्य को **जानते थे**, और **जानबूझ कर** पुराने नियम के बलिदानों से फिर कर दूसरे बलिदानों की ओर चले गए थे - उन्हें मार डाला जाए अर्थात **स्वभाविक मृत्यु -** जो ऐसे कार्यों के प्रति परमेश्वर की **अप्रसन्नता** को प्रकट करता है।

यह एक गंभीर पाप है जिसका परिणाम कड़ी ताड़ना है - **शारीरिक मृत्यु**
पढ़ें 1 कुरिन्थियों 10:1-11

यदि उसके लोगों को इतना कड़ा दण्ड मिलेगा तो फिर ....

इब्रानियों 10:29 तो सोच लो कि वह कितने और भी **भारी दण्ड** के योग्य ठहरेगा, जिस ने **परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा**, और वाचा के **लहू** को जिस के द्वारा **वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है,** और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया।

- **परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा -** बहुत **अपमान** और असहनीय निन्दा के साथ व्यवहार, मानो कि यीशु मसीह का कोई मान ही नहीं है। किसी व्यक्ति को पांवों से रौंदना सबसे अधिक निन्दनीय है, उसको परमेश्वर का पुत्र और उद्धारकर्ता के रूप में नकारना। **एक विश्वासी कभी भी ऐसा नहीं करेगा।**
- **वाचा के लहू को.... अपवित्र जाना है** : **अपवित्र** - इस शब्द का अर्थ - **आम कर देना**, जो दूसरे के समान हो और उनसे किसी भी तरह अलग न हो। पवित्र नहीं। विशेष नहीं। पर्याप्त नहीं। एक सच्चा विश्वासी कभी भी इस प्रकार नहीं सोचेगा।
- **पवित्र - ध्यान दें उसने यह नहीं कहा "धर्मी ठहराया गया"। एक सच्चा विश्वासी ऊपर दिए गए कार्य कभी नहीं करेगा।** अत: यहाँ सन्दर्भ एक **अविश्वासी** से है जो एक सच्चे विश्वासी के साथ **जुड़ने से पवित्र ठहराया गया,** जिस प्रकार 1 कुरिन्थियों 7:14 में लिखा है। या फिर उस "मिश्रित भीड़" के समान जो परमेश्वर के लोगों के साथ मिस्र से निकल कर आई थी (निर्गमन 12:38)। वे केवल इसलिए आए थे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आशीषों को देखा था और उसे चाहते थे।

  पवित्र शब्द के दो अर्थ हैं: 1. पवित्र किया जाना और 2. अलग करना । यहाँ और दूसरे पदों में इस शब्द का अर्थ केवल : "**अलग करना" है।**

  उदाहरण:
  निर्गमन 13:2 प्रत्येक पहलौठे को मेरे लिए पवित्र ठहराना का अर्थ "अलग करना" है। इसका अर्थ यह नहीं है कि "प्रत्येक पहलौठे को मेरे लिए पवित्र कर दो" क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते ।

1 पतरस 3:15 मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो। यहाँ पर भी इसका अर्थ पवित्र करने से नहीं है। हम उसे पवित्र नहीं बनाते, वह पवित्र है। इसका स्पष्ट अर्थ है : मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में **अलग कर** के रखो।

- **अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया** - उस सत्य को **"न"** बोल कर, जो पवित्र आत्मा ने कहा कि "यीशु के बहुमुल्य लहू" (1 पतरस 1:19) ने हमारे लिए **मुफ़्त** में कर दिया, बिना मेरी ओर से कुछ मिलाए।

जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह और उसके लहू से फिर जाता है - जो क्षमा और शुद्ध करने का एकमात्र बलिदान है - तो वे धार्मिक गतिविधियों की ओर मुड़ कर चले जाते हैं - जो एक बहुत बड़ा अपमान है - उस बात के लिए जो यीशु ने हम सब के लिए किया और अपने लहू के द्वारा किया।

एक सच्चा विश्वासी - सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद (10:26) - जानबूझ कर या किसी उद्देश्य से कभी भी **न तो** परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदेगा , और न ही **वाचा के लहू** को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, **अपवित्र** जानेगा।

इब्रानियों 10:30-31 क्योंकि **हम उसे जानते हैं**, जिस ने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: **और फिर** यह, कि प्रभु **अपने लोगों** का न्याय करेगा।(31) जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।।

- **पलटा** लेना मेरा काम है, मै ही बदला दूँगा
  यह पद 29 से आगे जारी है और इसका संदर्भ वे सब लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र के लहू के द्वारा दिए गए उद्धार के उपाय को **त्याग** दिया और **तिरस्कार** किया।

- यह व्यवस्थाविवरण 32:35 से लिया गया है, वह "**अपनी संतानों**" और दूसरे जो उसकी सन्तान **नहीं हैं,** उनके बीच अन्तर को बतलाता है। (देखें पद 5, 9, 32, 36 और 41 मैं .. अपने **विरोधियों** से पलटा लूंगा, और **अपने बैरियों** को बदला दूंगा।।)

अपने विरोधियों से परमेश्वर का **पलटा लेना** - जिन्होंने **उसके पुत्र के लहू** के द्वारा किए गए उपाय का तिरस्कार किया है - इसे पूरे पवित्र शास्त्र में व्यक्त किया गया है।

उदाहरण के लिए :
मत्ती 13:30, 38-43 जंगली बीज का दृष्टान्त :
(30) कटनी तक **दोनों को एक साथ बढ़ने दो** (जुड़े रहने के द्वारा पवित्र ठहराया जाना) , और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा; पहिले जंगली दाने के पौधे बटोरकर **जलाने के लिये** उन के गट्ठे बान्ध लो, और गेहूं को **मेरे खत्ते** में इकट्ठा करो।। (38) ..... अच्छा बीज **राज्य के सन्तान**, और **जंगली बीज दुष्ट के**

सन्तान हैं।(39) जिस बैरी ने उन को बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं।(40) सो जैसे **जंगली दाने** बटोरे जाते और **जलाए जाते हैं** वैसा ही जगत के अन्त में होगा।(41) मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे।(42) और उन्हें **आग के कुंड** में डालेंगे, वहां **रोना और दांत पीसना होगा**।(43) उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाई चमकेंगे; जिस के कान हों वह सुन ले।।

पद 30 .... और फिर यह, कि **प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा**।

- **और फिर** स्ट्रोंग शब्दानुक्रमणिका के अनुसार सही अनुवाद है और यह उसी के समान **किसी दूसरी बात** ले जाने का संकेत करता है जो जरूरी **नहीं** उसी घटना की हो। परमेश्वर के लोगों का न्याय होना (1 पतरस 4:17), परन्तु अविश्वासियों से पलटा लेना और उन्हें दोष मुक्त करना।

- वह अब "**अपने लोगों"** के बारे में बात कर रहा है, जिन्होंने उस पर और उसके लहू के द्वारा क्षमा, धर्मी ठहराए जाने, मेल किए जाने, और छुटकारे के कार्य पर विश्वास किया ।

- सच्चे विश्वासी के लिए, परमेश्वर का **बदले** का प्रतिशोध अपने पुत्र पर हुआ। यीशु मसीह ने हमारे अपराधों का मुल्य **चुकाया** (यशायाह 53) और **हमारे लिए अनन्त जीवन की मोहर लगा दी।**

- सो अब जो मसीह यीशु **में** हैं, उन पर **दण्ड की आज्ञा नहीं**। क्योंकि **जीवन की** आत्मा की व्यवस्था ने **मसीह यीशु** में **तुम्हें पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया**। रोमियों 8:1-2

प्रभु परमेश्वर अनुग्रहकारी और दयालु है, और अपने पुत्र और पुत्रियों के प्रति उसकी प्रेमय करुणा आपार है (इब्रानियों 8:12; याकूब 5:11)। परन्तु हम अपने द्वारा किए गए कार्यों के प्रति जिम्मेवार हैं :

> इब्रानियों 12:6 क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की **ताड़ना** भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को **कोड़े भी लगाता है।**

2 कुरिन्थियों 5:9-10 (9) इस कारण **हमारे मन की उमंग** यह है, ... **हम उसे भाते रहें**।(10) क्योंकि **अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन** के साम्हने **खुल जाए,** कि हर एक व्यक्ति अपने अपने **भले बुरे** कामों का बदला जो उस ने देह के **द्वारा किए हों** पाए।।

विश्वासी के **कार्यों** का न्याय मसीह के न्याय आसन पर किया जाएगा।

हमारे **कार्यों** का न्याय होगा, **हमारे पापों का नहीं**, क्योंकि हम पहले ही देख चुके हैं कि विश्वासी के पापों का न्याय मसीह में क्रूस पर हो चुका है, सो अब जो मसीह यीशु **में** हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।(2) क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे **पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया**।(3) क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को **परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को** पापमय शरीर की समानता में, और **पाप के बलिदान होने के लिये** भेजकर, शरीर में **पाप पर दण्ड** (न्याय) **की आज्ञा दी।** रोमियों 8:1-3

मसीह के न्याय आसन पर**, विश्वासी अपना लेखा परमेश्वर को देगा**। इसलिए, हमें अपने कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिए और दूसरे के कार्यों का न्याय न करें।

रोमियों 14:10-13 तू अपने भाई पर **क्यों दोष लगाता है**? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? **हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे**।(11) क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा।(12) सो **हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।।**(13) सो आगे को **हम एक दूसरे पर दोष न लगाएं** पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के साम्हने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे।

यह बहुत ही नम्र विचार है कि एक दिन हम विश्वासी अपने द्वारा किए गए कार्यों को अपने सामने देखेंगे - "चाहे भली होंगी या बुरी" और "जो भी निकम्मी बात मनुष्य बोलेंगे" (मत्ती 12:36-37), वे उनके सामने होंगी।

कुछ **लज्जित होंगे:**

1 यूहन्ना 2:28 निदान, हे बालको, **उस में बने रहो**; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें **हियाव** हो, और **हम उसके आने पर उसके साम्हने** लज्जित न हों।

और बहुत से ***"हानि उठाएँगे"***:1 कुरिन्थियों 3:15
उद्धार की हानि नहीं, परन्तु प्रतिफल की हानि।

पद 31 जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना **भयानक बात है।।**

उसके लोगों के लिए भी : 1 कुरिन्थियों 10:1-11 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए।(2) और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपितिस्मा लिया। (3) और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया।(4) और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे, जो उन के साथ- साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।(5) परन्तु परमेश्वर **उन में के बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ**, इसलिये वे जंगल **में ढेर हो गए**।(6) ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरी, कि जैसे उन्हों ने लालच किया, वैसे हम बुरी

वस्तुओं का लालच न करें।(7) और न तुम मूरत पूजनेवाले बनों; जैसे कि उन में से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने- पीने बैठे, और खेलने- कूदने उठे।(8) और न हम व्यभिचार करें; जैसा उन में से कितनों ने किया: **एक दिन में तेईस हजार मर गये**।(9) और न हम प्रभु को परखें; जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा **नाश** किए गए। (10) और न तुम कुड़कुड़ाए, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा **नाश** किए गए।(11) **परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर भी: और वे हमारी चितावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।**

इब्रानियों 12:5-11 और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की **ताड़ना** को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।(6) क्योंकि **प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है**; और **जिसे पुत्र** बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है।(7) तुम दुख को ताड़ना समझकर **सह लो:** परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता?(8) यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!(9) फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिस से जीवित रहें।(10) वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर **यह तो हमारे लाभ के लिये करता है**, कि हम भी **उस की पवित्रता के भागी हो जाएं**।(11) और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ **धर्म का प्रतिफल** मिलता है।

याकूब 1:2-4 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो(3) **तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो**, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से **धीरज उत्पन्न होता** है।(4) पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि **तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ** और तुम में किसी बात की घटी न रहे।।

इब्रानियों 10:32-34 परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम **ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे**।(33) कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यों, कि तुम उन के साझी हुए जिन की दुर्दशा की जाती थीं।(34) क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह **जानकर**, कि तुम्हारे पास एक और भी **उत्तम** और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है।

> लेखक यहाँ अपने पढ़ने वालों को **प्रोत्साहित** करता है कि वे याद करें और उस जोश, वचनबद्धता और विश्वासपूर्णता की ओर लौट आएं जो हम में पहले थी और किस प्रकार यीशु के पीछे चलने के खातिर इस संसार की रीतियों से फिर जाने पर उन्हें किस तरह के तिरस्कारों, निन्दाओं और क्लेशों को सहा ।

वह हमें **प्रोत्साहित** करता है कि हम इस संसार के स्वार्थी तौर तरीकों को **न** अपनाएं परन्तु लोगों की सेवा और दूसरों की आवश्यकताओं के लिए देने पर अपने ध्यान को केन्द्रित रखें, यह जानते हुए कि हमारा घर और नागरिकता स्वर्ग की है।

1 कुरिन्थियों 3:11-15 क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।(12) और **यदि कोई** इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखता है।(13) तो **हर एक का काम प्रगट हो जाएगा**; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग **हर एक का काम परखेगी** कि कैसा है?(14) **जिस का काम** उस पर बना हुआ **स्थिर** रहेगा, **वह मजदूरी पाएगा।**(15) और यदि किसी का **काम जल जाएगा, तो हानि उठाएगा;** पर **वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते।।**

बच जाएगा - इब्रानियों 10:14 क्योंकि उस ने **एक ही बलिदान** के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, **सर्वदा के लिये सिद्ध** कर दिया है। (विश्वास के द्वारा। प्रेरितों के काम 26:18)

इब्रानियों 10: 35 सो अपना हियाव न छोड़ो (परमेश्वर की सेवा करने में, पद 34 के सन्दर्भ से) क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।

- विषय है : **अपने प्रतिफल को न खोना।**
  आशीष / सौभाग्य / घनिष्ठता जो **परमेश्वर को प्रसन्न** करने से आती है उन्हें न खोना
  इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि ... हम उसे **भाते** रहें। 2 कुरिन्थियों 5:9

  मत्ती 25:19-21 **बहुत दिनों के बाद** उन दासों का स्वामी आकर उन से **लेखा लेने लगा।**(20) जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं।(21) उसके स्वामी ने उससे कहा, **धन्य है अच्छे और विश्वासयोग्य दास**, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा **अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।**

  इस सेवक ने अपने स्वामी को प्रसन्न किया और उसने बहुत आशीषें पाई और बड़ा प्रतिफल पाया।

इब्रानियों 10:36-37 क्योंकि तुम्हें **धीरज** धरना अवश्य है, ताकि **परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके** तुम **प्रतिज्ञा** का फल पाओ।(37) क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि **आनेवाला आएगा**, और देर न करेगा।

- बाइबल के बहुत सी प्रतिज्ञाएँ, हमारी विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता पर निर्भर है।

मत्ती 25:34-36 तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, **आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ,** जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।(35) क्योंकि मै भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया।(36) मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए।

इब्रानियों 10:38 और **मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा**, और यदि **वह** (उसका धर्मी जन) पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से **प्रसन्न** न होगा।

- विषय यह है : एक सच्चा विश्वासी (विश्वास द्वारा **धर्मी),** परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने के द्वारा ऐसा जीवन जीता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है (पद 33)।

- यदि उसका धर्मी जन, सेवा करने के जीवन और कठिनाइयों (पद 32-34) से **पीछे हट जाए**, तो वह परमेश्वर को **प्रसन्न नहीं कर रहा।** यीशु हमारा आदर्श है (1 पतरस 2:21-23)।

  "पीछे हटने" का यह अर्थ नहीं कि **वह व्यक्ति अनन्त जीवन की हानि के साथ अब विश्वास नहीं करता।** वह केवल आज्ञाकारिता और सेवा करने से पीछे हट रहा है। यीशु उसका उद्धारकर्ता है, लेकिन उसका प्रभु नहीं है।
  (लूका 6:46)

जब वह यह कहता है: **मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा** - हमें यह ध्यान रखना चाहिए:

- **प्रभु जानता है कि कौन उसकी भेड़ें हैं** :
  यूहन्ना 10:27-28 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और **मैं उन्हें जानता हूं,** ... और **मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं,** और **वे कभी नाश नहीं होंगी** .....।

- **और प्रभु जानता है कि कौन उसकी भेड़ें नहीं हैं :**
  मत्ती 7:23 तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि **मैं ने तुम को कभी नहीं जाना,**

विश्वास के द्वारा धर्मी, सिद्ध किए गए और प्रभु के लहू से छुड़ाए गए उसके विश्वासी लोगों के बाइबल में बहुत से उदाहरण हैं, जो अनेक भरमा देने वाले कारणों से वापस अपने पुराने धार्मिक आदतों, पापमय रीतियों, दूसरे बलिदानों या मूरतों की ओर चले गए।

वे इन सब बातों में अज्ञानता के कारण जाते हैं; धार्मिक आत्मा द्वारा उकसाए जाते हैं जो यह सोच कर कि वे अपने अच्छे कार्यों के कारण धार्मिकता और स्वीकृति को **अर्जित कर सकते** है, उन्हें संतुष्टि और गर्व का एहसास देता है ।

- परमेश्वर हमें **भले कार्यों** से भरपूर रहने को कहता है लेकिन यह धार्मिकता के किसी स्तर को अर्जित करने के लिए **नहीं** होनी चाहिए (मत्ती 5:16; इफि. 2:10; तीतुस 3:5)।

जब हम उस **एक बलिदान** से फिर जाते हैं और उसमें कुछ और जोड़ देते हैं, तो हम यह कह रहे हैं कि यीशु का लहू पर्याप्त नहीं है। अत: आप देख सकते हैं कि किस प्रकार यह परमेश्वर को **प्रसन्न नहीं करता -** आख़िरकार यह सब यीशु ने हम सब के लिए किया है - तथा उसका दण्ड और ताड़ना उस व्यक्ति पर होती है।

यहाँ एक उदाहरण है :
यहेजकेल 44:10-16 वे निकट नहीं आ सकते - उन्होंने परमेश्वर की सेवा और उसके साथ और अधिक विशेष सम्बन्ध की आशीषों को खोया।

मसीह में, उसके साथ लहू की वाचा में एक धर्मी ठहराया गया विश्वासी, परमेश्वर की **आज्ञा उल्लंघन** करना जारी रखता है, किसी और मूरत या बलिदान की ओर मुड़ जाता या उसमें कुछ जोड़ देता है, तो वह अपने स्वामी की विशेष सेवा करने का सौभाग्य और उसके साथ निकट सम्बन्ध की आशीषों को **खो** देगा। वे अपने **मुकुट** को **खो** देंगे (प्रकाशितवाक्य 3:11)। और यह भी संभव है कि वे उस स्तर तक पहुँच जाएं जहाँ से परमेश्वर उन्हें अपने पास बुला ले। यही हनन्याह और सफीरा के साथ हुआ (प्रेरितों के काम 5:11)। उनकी मूरत धन था।

परमेश्वर के लोग इस्राएल ने **बलवा** किया और अपने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने से **इनकार** कर दिया।

- हमारा बलवा और अनाज्ञाकारिता हमें इस पृथ्वी पर परमेश्वर की पूरी आशीषों का आनन्द उठाने से रोकती हैं।

बाद में उन्होंने अपने मन को बदला और उस स्थान में प्रवेश करना चाहा, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें "दूध और मधु की धाराओं" वाले देश को प्राप्त करने नहीं दिया।

- परमेश्वर ने उन्हें मन फिराव का मन नहीं दिया (2 तीमु. 2:25-26)

इसका परिणाम, इस पृथ्वी पर **सुखी जीवन** जीने के लिए **बिना पूरी आशीषों** के सौभाग्य के जंगलों में **मुश्किल** और **कठिन जीवन** जीना था।

> 1 कुरिन्थियों 10:5 परन्तु परमेश्वर **उन में बहुत से लोगों से प्रसन्न न हुआ**, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।

इब्रानियों 10:39 पर **हम** (सच्चे विश्वासी) **हटनेवाले** (या पीछे फिरनेवाले/जानेवाले) **नहीं,** कि नाश हो जाएं पर **विश्वास करनेवाले हैं,** कि प्राणों को बचाएं।।

- नाश - यूनानी शब्द का अर्थ - बर्बाद या नुकसान। जो उसके लहू द्वारा ख़रीदे गए लोग, इस्राएलियों का हुआ क्योंकि उन्होंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था :
  जंगल में ढेर हो गए .... कितने तो सांपों के द्वारा नाश किए गए... कितने ही नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। (1 कुरिन्थियों 10:1-11)। लेकिन फिर भी वे लहू की वाचा में बंधे उसके लोग थे।

- हम पीछे हटने या मुड़ने तथा परमेश्वर की आज्ञा न मानने और उनका पालन न करने के द्वारा अपने जीवन में बहुत सी कठिनाइयों, समस्यायों, हानि और विनाशों को ले आते हैं ।

वह अनन्त जीवन को खोने के बारे में बात **नहीं** कर रहा, परन्तु **आज्ञाकारिता तथा परमेश्वर के उद्धार और सम्पूर्ण आशीषों में चलने के विषय में है।**

धर्मी ठहराए जाने और **बचाए जाने** के बीच अन्तर है।

जरूरी नहीं कि एक बार बचाया गया सदा बचा रहेगा, सच हो।

एक बार धर्मी ठहराया गया सदा धर्मी ठहरेगा, यह सच है।

(रोमियों 4:7-8; 5:1; 9-10; 8:26-39; 10:9-13)

उदाहरण :
प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएल (परमेश्वर के राज्य का चित्र) :
वे मेमने के लहू के द्वारा छुड़ाए और धर्मी ठहराए गए थे।
परन्तु बाद में, पाप के कारण - उन्हें बेबीलोन भेज दिया गया (राज्य से बाहर)।
वे अभी भी उसके थे और धर्मी ठहराए हुए थे लेकिन वे अपने कार्यों के परिणामों से बचाए नहीं गए थे, जिसका परिणाम उनकी स्वतन्त्रता की हानि और उन पर अत्याचार हुआ।

इस अभिप्राय से अधिकांश धर्मी ठहराए गए लोग, बचाए नहीं गए। यानी, वे पाप के ऊपर विजय में नहीं चल रहे हैं जहाँ शैतान उन्हें छू नहीं सकता।

अनन्त उद्धार के लिए <u>उसके क्रूस</u> को उठाओ - धर्मी ठहराया जाना।

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से **तुम्हारा उद्धार हुआ** है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। इफिसियों 2:8

प्रतिदिन के उद्धार के लिए <u>अपने क्रूस</u> को उठाओ - पाप और शैतान पर विजय

क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम **उद्धार पानेवालों** के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। 1 कुरिन्थियों 1:18

(बचाए जाना - निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया और वह सच जो समाप्त नहीं हुआ)

स्मरण रखें : इब्रानियों 9:12 और बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, **और <u>अनन्त</u> छुटकारा प्राप्त किया**। और धर्मी ठहराया गया ।

विषय यह है : परमेश्वर को संतुष्ट करने के लिए केवल एक ही बलिदान है।

केवल यीशु का लहू :

1. पापों से क्षमा देता है - धर्मी ठहरा कर, अनन्त जीवन देता है (रोमियों 3:24)
2. और मुझे मेरे पापों से शुद्ध करके घनिष्ट संगति, आशीषें और विशेष अधिकार देता है। (1 यूहन्ना 1:6-10)

यदि मैं शुद्ध होने के लिए किसी दूसरे बलिदान की ओर - क्रूस से - यीशु मसीह के लहू से दूर हो जाता हूँ - या उन बलिदानों की ओर फिर जाता हूँ और परमेश्वर के उपाय को नज़र अंदाज़ कर देता हूँ - तो मैं अनुग्रह से दूर चला गया हूँ।

मैं पाप क्षमा होने के एक मात्र उपाय से फिर गया हूँ:

गलातियों के लोगों ने यही किया था:
(1:6) मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम **इतनी जल्दी फिर कर** और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। "फिर जाना" एक अच्छा अनुवाद है। (ध्यान दे: जिन्हें उन से पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, रोमियों 8:30)

(3:1) अरे निर्बद्धि गलातियों, किस ने तुम्हें *मोह लिया? (* झूठी बातों से आकर्षित हो जाना)

(3:2-3)मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूं, कि तुम ने **आत्मा को,** क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से **पाया?** (3) क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि **आत्मा की रीति पर आरम्भ** करके अब **शरीर की रीति पर अन्त करोगे?**

उन्होंने **आत्मा को पाया** और फिर **धर्मी** ठहराए गए। परन्तु वे उस "सकरे मार्ग" (मत्ती 7:14) अर्थात मेमने के लहू, यीशु मसीह से फिर गए और यह सोच कर आत्म प्रयास के भरमाने वाले कार्यों की ओर चले गए कि शायद उन्हें परमेश्वर की कृपा और आशीषें प्राप्त हो जाएं।

गलातियों 5:1-2मसीह ने **स्वतंत्रता** के लिये हमें स्वतंत्र किया है (सब प्रकार आत्म प्रयास, और अलग अलग प्रकार के धार्मिक कार्यों से जिनका कोई प्रभाव नहीं है) ; सो इसी में स्थिर रहो, और **दासत्व के जूए** में फिर से न जुतो।। (2) देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं, कि यदि खतना (किसी भी प्रकार का शरीर का कार्य) कराओगे, तो मसीह से **तुम्हें कुछ लाभ न होगा**। (4) तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग (शाब्दिक यूनानी अर्थ, प्रभावहीन) और **अनुग्रह से गिर गए हो**। मुफ़्त दान से आत्म प्रयास के कार्य में गिर गए।

(13) हे भाइयों, **तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो** परन्तु ऐसा न हो, कि **यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने,**

तुलना करें : 1 यूहन्ना 1:7 पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही **हम भी ज्योति में चलें**, तो एक दूसरे से **सहभागिता** रखते हैं; और उसके पुत्र **यीशु मसीह का लहू** हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (9) **यदि हम अपने पापों को मान लें,** तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से **शुद्ध करने** में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

- **विश्वास करें** : अनन्त जीवन के लिए (यूहन्ना 3:16)
- प्रतिदिन शुद्ध होने के लिए पापों को **मान लें** ताकि आशीषों और संगति को बनाए रखें

क्योंकि **पाप क्षमा कर दिए गए है,** तो अब विषय हमारे द्वारा किए आज के पापों से **हमें प्रतिदिन शुद्ध** होने का है। और विषय हमारे धर्मी ठहराए जाने **का नहीं** परन्तु परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ **संगति** का है तथा उन आशीषों और विशेष अधिकारों का जो उस संगति से निकलती है।

इब्रानियों 10:26 में यही कहा गया है : क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।

- ❖ हमें कभी भी किसी और बलिदानों की ओर नहीं जाना चाहिए।
- ❖ मेरे पापों को क्या धो सकता है? यीशु के लहू के सिवाय और कुछ नहीं
- ❖ मुझे फिर से क्या शुद्ध कर सकता है? यीशु के लहू के सिवाय और कुछ नहीं
- ❖ जिस प्रकार मैं तर्कहीन हूँ, लेकिन तेरा लहू मेरे लिए बहाया गया

मेरी आशा केवल यीशु मसीह के लहू और धार्मिकता पर बनी है

आमीन ।।